बौद्ध संगीतियाँ

	प्रथम	द्वितीय	तृतीय	चतुर्थ
स्थान :-	राजगृह [सप्तपर्णी गुफा]	वैशाली	पाटलीपुत्र	कुण्डलवन (काश्मीर)
समय :-	483 ई० पूर्व	383 ई० पूर्व	251 ई० पूर्व	प्रथम शती ई०
अध्यक्ष :-	महाकश्यप	साबाकामी	मोग्गलिपुत्त तिस्य	वसुमित्र (अध्यक्ष), अश्वघोष (उपाध्यक्ष)
शासनकाल :-	अजातशत्रु (हर्यंक वंश)	कालाशोक (शिशुनाग वंश)	अशोक (मौर्य वंश)	कनिष्क (कुषाण वंश)

परिणाम :-

प्रथम

- विनय पिटक [आनन्द द्वारा रचित] → बौद्ध संघ के नियम
- सुत्त पिटक [उपालि द्वारा रचित] → बौद्ध संघ का सिद्धान्त

- बुद्ध के उपदेशों को दो पिटकों मे विनय पिटक तथा सुत्त पिटक में संकलित किया गया।

द्वितीय

धर्म स्थाविर — महासंघिका

- अनुशासन को लेकर मतभेद के समाधान के लिए बौद्ध धर्म को दो भागों मे बाँट गया।

तृतीय

अभिधम्म पिटक

- संघ भेद के विरुद्ध कठोर नियमों का प्रतिपादन करके बौद्ध धर्म को स्थायित्व प्रदान करने का प्रयत्न किया गया।
- धर्म ग्रंथो का अंतिम रूप से सम्पादन किया गया तथा तीसरा पिटक अभिधम्म पिटक जोड़ा गया।
- इस संगीति मे थेरावादियों का प्रभुत्व रहा
- अभिधम्म पिटक मे दार्शनिक विवेचना का उल्लेख।

चतुर्थ

हीनयान	महायान
• स्वंय के प्रयत्नों पर बल देता था	• बुद्ध प्रति विश्वास व भक्ति पर बल देना।
• पालि भाषा में वर्णित	• संस्कृत भाषा मे वर्णित
• ऐतिहासिक में विश्वास	• बोधिसत्व में विश्वास
• मुक्ति मार्ग को स्वंय ढूंढना	• यह गुणों के हस्तांतरण में विश्वास रखता है।

Ashish

* बौद्ध धर्म का योगदान :-

- भारतीय दर्शन में तर्कशास्त्र की प्रगति बौद्ध धर्म के प्रभाव से हुई। बौद्ध दर्शन में शून्यवाद तथा विज्ञानवाद की जिन दार्शनिक पद्धतियों का उदय हुआ। उसका प्रभाव शंकराचार्य के दर्शन पर पड़ा। यही कारण है कि शंकराचार्य को कभी-कभी प्रच्छन्न बौद्ध भी कहा जाता है।
- बौद्ध धर्म की सर्वाधिक महत्वपूर्ण देन भारतीय कला एवं स्थापत्य के विकास में रही।
- सांची, भरहुत, अमरावती के स्तूपों तथा अशोक के शिला स्तम्भों, कार्ले की बौद्ध गुफाएं, अजन्ता, एलोरा, बाघ तथा बराबर की गुफाएँ बौद्ध कालीन स्थापत्य कला एवं चित्रकला श्रेष्ठतम आदर्श है।
- बुद्ध के अस्थि अवशेषों पर भट्टिप्रोलु (द० भारत) में निर्मित प्राचीनतम स्तूपों को महास्तूप की संज्ञा दी गई है।
- गंधार शैली के अन्तर्गत ही सर्वाधिक बुद्ध मूर्तियों का निर्माण किया गया। सम्भवतः प्रथम बुद्ध मूर्ति मथुराकला के अन्तर्गत बनी।
- संघ की सभा में प्रस्ताव (नत्ति) का पाठ होता था। प्रस्ताव पाठ को अनुसावन कहते थे।
- सभा की वैध कार्यवाही के लिए न्यूनतम संख्या (कोरम) 20 थी।
- संघ में प्रविष्ट होने को उपसम्पदा कहा जाता था। बौद्ध संघ का संगठन गणतंत्र प्रणाली पर आधारित था।
- संघ में चोर, हत्यारें, ऋणी व्यक्तियों, राजा के सेवक, दास तथा रोगी व्यक्तियों का प्रवेश वर्जित था।
- बौद्धों के लिए महीने के 4 दिन अमावस्या, पूर्णिमा और दो चतुर्थी दिवस उपवास के दिन होते थे।

* बौद्ध के जीवन से संबंधित बौद्ध धर्म के प्रतीक :-

घटना	प्रतीक/चिन्ह
जन्म	कमल व सांड
गृह त्याग	घोड़ा
ज्ञान	पीपल (बोधि वृक्ष)
निर्वाण	पद चिन्ह
मृत्यु	स्तूप

Ashish